अग्निशमन प्रशिक्षण

अनुक्रमणिका

- आपातकालमें संजीवनी : सनातनकी ग्रंथमाला ! ८
- प्रस्तुत ग्रंथकी भूमिका १०
- आध्यात्मिक परिभाषामें वैशिष्ठ्यपूर्ण प्रस्तावना ! १२

१. प्रस्तावना / पूर्वविवेचन १३
२. आगका शास्त्र १५
२ अ. आगसे मिलनेवाली उष्णताका उद्‌गम १५
२ आ. आगसे संबंधित परिभाषाएं १६
२ इ. आगके घटक २ ई. आगके चरण १७
२ उ. आग लगनेके कुछ सामान्य कारण १९
२ ऊ. आग फैलनेके कारण २ ए. आगका वर्गीकरण १९
३. अग्निशमन २२
३ अ. आगको देखनेपर आप क्या करोगे ? २२
३ आ. आगका शोध लगानेवाले उपकरण एवं उनका उपयोग २४
३ इ. अग्निशमनकी पद्धतियां २६
३ ई. अग्निशमनके माध्यम २७
४. अग्निशमन उपकरण ३०
४ अ. स्थायी अग्निशामक (फिक्स्ड एक्सटिंग्विशर) ३०
४ आ. सुवाह्य अग्निशामक (पोर्टेबल एक्सटिंग्विशर) ३०
५. अग्निशमन दल ४४
५ अ. अग्निशमन दलके कर्मचारीके (फायरमैनके) कर्तव्य ४५
६. प्रसंग तथा प्रासंगिक समाधान-योजना ४५
६ अ. प्रतिकूल प्रसंगमें अकेले अग्निशमनका प्रयत्न न करें ४६
६ आ. जलनेवाले घरसे / वास्तुसे स्वयंको बचाएं ४६

६ इ. आगसे घिर जानेपर क्या करें ? ४७
६ ई. ऊंचे भवनको आग लगनेपर ४८
६ उ. स्वयंको ही आग लगी हो, तो ४८
६ ऊ. साथीदारको आग लगनेपर ४९
६ ए. घरेलू कार्योंके लिए प्रयुक्त रसोई गैसका रिसाव होनेपर ४९
६ ऐ. स्टोवका भभका उडनेपर अथवा कढाईके तेलमें आग लगनेपर ४९
६ ओ. अग्निशमन हेतु अयोग्य माध्यमके प्रयोगसे होनेवाली दुर्घटनाएं ५१
७. अग्निप्रतिबंधक समाधान-योजना ५२
७ अ. कार्बनयुक्त घनरूप ईंधन ५२
७ आ. द्रवरूप / वायुरूप ईंधन ५३
७ इ. धातुरूप ईंधन ५३
७ ई. बिजली एवं विद्युत-उपकरणोंके कारण लग सकनेवाली आग ५३
७ उ. रसोईघरमें आग ५४
७ ऊ. पटाखे ५७
७ ए. आग एवं बच्चे ५८
७ ऐ. रसायनोंका उपयोग करते समय ध्यान देनेयोग्य बातें ५९
७ ओ. द्रवरूप वायुके सिलिंडरके उपयोगमें ध्यान देनेयोग्य सूत्र ६०
७ औ. ऊंची अट्टालिकाओंमें रहनेवालोंके लिए ६०
७ अं. यातायात सुरक्षा ६२
७ क. सर्वसाधारण सूचनाएं ६३
७ ख. औद्योगिक सुरक्षा ६३
७ ग. संकटकालीन कार्ययोजना ६५
८. जलनेसे होनेवाले घाव एवं प्रथमोपचार ६७
९. आगकी कुछ प्रसिद्ध घटनाओंका विश्लेषणात्मक अध्ययन ७१
१०. आध्यात्मिक शक्तिसे अग्निप्रकोप रोकना ७५
११. 'अग्निशमन प्रशिक्षण'संबंधी सनातनका प्रबोधनात्मक कार्य ७७

भूमिका

'एक छोटीसी चिनगारी पूरे जंगलको राख कर देती है ।', इस आशयकी एक उक्ति अंग्रेजीमें है । केवल इस उक्तिसे आगकी दाहकता, उसकी संहारकता अथवा उसके भीषण परिणामोंकी गंभीरता ध्यानमें नहीं आती; अपितु आगका प्रत्यक्ष अनुभव करनेवाले ही उसकी कल्पना कर सकते हैं । यद्यपि 'आग' दैनिक जीवन-व्यापारका अत्यावश्यक घटक है, तब भी उसके संदर्भमें नियंत्रित तथा अनियंत्रितकी जो लक्ष्मणरेखा होती है, वह अधिक महत्त्वपूर्ण है । मनुष्यद्वारा सामान्यतः प्रयुक्त आगके सर्व प्रकार नियंत्रित होते हैं; किंतु किसी विशेष प्रसंगमें आग नियंत्रणकी लक्ष्मणरेखा लांघ सकती है । ऐसी स्थितिमें उसपर कौनसे उपाय आवश्यक हैं, आगके संपर्कमें अधिक रहनेवालोंको इसका ज्ञान होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । अग्निशमनके संदर्भमें प्रशिक्षण बडेबडे कारखानों, यात्री नौकाओं (जहाज), विमान आदिमें दिया जाता है; परंतु दुःखकी बात यह है कि सामान्य मनुष्य, तथा दिनके ५-६ घंटे आगकी सहायतासे भोजन बनानेवाली गृहिणी आगका शास्त्र तथा अग्निशमनके उपायोंके संदर्भमें पूर्णतः अनभिज्ञ होती है । इस अज्ञानसे कई दुर्घटनाएं घटती हैं । आगका शास्त्र, अग्निशमनके विविध माध्यम तथा उनका उपयोग करनेकी पद्धतियां, अनुचित माध्यमोंका उपयोग करनेसे होनेवाले दुष्परिणाम आदिके संदर्भमें शास्त्रीय दृष्टिकोणसे एवं सरल भाषामें ज्ञान देना, इस ग्रंथको संकलित करनेका प्रमुख उद्देश्य है ।

हिंदु धर्ममें देवऋण, पितृऋण, ऋषिऋण एवं समाजऋण, इन चार ऋणोंको चुकाना प्रत्येक मनुष्यका निहित कर्तव्य माना गया है । परस्पर सहयोग एवं परोपकारसे समाजऋण चुका सकते हैं । अग्निशमन प्रशिक्षणका ज्ञान आत्मसात करना तथा समय आनेपर समाजके लिए उसका उपयोग करना, समाजऋण चुकानेका एक अंग है ।

अग्निप्रलयकी आपत्तिके कारण राष्ट्रकी जैवीय तथा वित्तीय हानि बडी मात्रामें होती है । इस हानिको रोकनेकी दृष्टिसे प्रयत्नरत होनेका अर्थ है राष्ट्रहित एवं राष्ट्ररक्षाके कार्यमें सहयोगी होना । राष्ट्रके जीवनमें ही समष्टिका जीवन अंतर्भूत होता है; क्योंकि राष्ट्र जीवित रहेगा, तो ही समाज जीवित रहेगा एवं समाज जीवित रहेगा, तो ही व्यक्ति जीवित रहेगा । व्यक्ति जीवित रहेगा, तो ही साधना कर पाएगा । अतः स्वहित तथा राष्ट्ररक्षा हेतु 'अग्निशमन प्रशिक्षण'के इस विषयका महत्त्व समझना प्रत्येकके लिए आवश्यक है ।

इस ग्रंथमें समाविष्ट ज्ञानको पढकर अग्निप्रकोपकी आपत्तिसे स्वयंकी तथा साधनाके रूपमें समाज एवं राष्ट्रकी रक्षा करनेकी क्षमता प्रत्येक व्यक्तिमें उत्पन्न हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है !

- संकलनकर्ता